3/6/1966 शुक्रवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– मुखड़ा देख ले .....

ओमशांति! ...ये मनुष्य ही सृष्टि है। अभी इस समय में तुम ब्राह्मण धर्म के मनुष्य बने हो और बाप शिक्षा देते हैं आत्माओं को। आत्मा को अभी अपने स्वधर्म का पता है कि हम आत्माएँ इस शरीर को भी चलाने वाली हैं। ये गाड़ी, रथ। इसको भी रथ कहा जाएगा ना। जैसे बाप आ करके इस रथ पर सवार हुए हैं। है तो वास्तव में शांत स्वरूप आत्मा। तो तुम्हारी आत्माएँ भी इस रथ पर सवार हैं। वास्तव में ये आत्माओं को ये ज्ञान भूल गया है कि हम स्वतः आत्मा शांत का स्वरूप हैं। हमारा रहने का स्थान है ही मूलवतन में। ये जो स्थूल शरीर हमको मिलता है, यहाँ मिलता है। अभी आत्मा अपने से बात करती रहती है। बाप (ने) सिखलाया है बच्चों को यानी आत्माओं को कि अभी तुम आत्माएँ हो। तुम्हारा स्वधर्म आत्मा है। अगर तुम चाहो कि हम शांत में बैठें, तो तुमको क्या करना होता है, अपन को आत्मा समझ और अपने (को) शांतिधाम का निवासी समझ थोड़ा टाइम के लिए चाहो तो शांत में बैठ सकते हो। मनुष्य शांति माँगते हैं। ऐसे कहते हैं ना– मन को शांति...। अभी ये कौन कहते है मेरे मन को शांति चाहिए? ये मन किसका है? मन,चित्त,बुद्धि ये किसकी है? ये आत्मा बात करती है ना कि मुझे शांति चाहिए। वा कहते हैं मेरे मन को शांति चाहिए वा कहते हैं मुझे शांति चाहिए। मुझे किसने कहा? आत्मा ने कहा, वो भूल गए हैं। इसलिए पहाके/पहेली भी देते हैं, एक रानी का हार गुम हो गया था। पड़ा था गले में; परन्तु समझती थी कि गुम हो गया है। सो बाहर ढूँढ़ती थी। ये पहेली बनाई है इस बात के ऊपर। तो इस बात के ऊपर ही बाप समझाते हैं कि बच्चे शांति चाहते हैं, उनको ये पता ही नहीं है कि हम आत्माएँ हैं ही शांत ; क्योंकि देहअभिमान हो करके , फिर उनको कहा जाता है– शांति चाहिए। तो बाप बच्चों को समझाते हैं और बच्चों ने समझा है कि हम आत्माएँ तो शांत स्वरूप हैं। आए हैं परमधाम से यहाँ पार्ट बजाने के लिए। अगर हम चाहें कि स्वधर्म में टिकें, तो हम इस शरीर के ऑरगन से डिटैच हो, हम कुछ भी बात नहीं करते हैं; परन्तु शरीर तो है ना। इसको ही कहा जाता है आत्मा अपने स्वधर्म में, शांत धर्म में, जितना चाहे इतना बैठ सकती है। तुम अगर चाहो तो हम बहुत समय बैठ जावें, कोई भी शरीर से कर्म न करें, तो सिर्फ इतना ही कहना है कि हम आत्मा हैं ना। हम इस शरीर से, इस ऑरगन से कोई भी काम नहीं लेते हैं यानी कर्म नहीं करना चाहते हैं। बस, ये समझ करके इसको फिर कहा जाता है सच्ची स्वधर्म की शांति। वो हठयोग कर करके शांति चाहते हैं; परन्तु नहीं, शांति तो तुम्हारा स्वधर्म है ; इसलिए तुम शांति की कभी ढूँढ नहीं करेंगी, अभी जबकि तुमको बाप से ज्ञान मिला है। ये शांति कहाँ से आई? शांति तो हमारा स्वधर्म है और हम रहने वाले भी वहाँ हैं। अच्छा, अभी ये कर्मक्षेत्र है, तो ज़रूर कुछ करना पड़े। बैठे रहेंगे, कितना देरी बैठे रहेंगे? अगर हम बैठ जाते हैं डिटैच हो करके तो कितना बैठेंगे? अच्छा, आधा घण्टा बैठ सकते हैं, घण्टा बैठ सकते हैं। ऐसे नहीं कि नहीं बैठ सकते हैं। अभ्यासी को बैठ सकते हैं। फिर भी शरीर जो है, इससे कर्म तो करना ही पड़ेगा। शरीर निर्वाह भी तो करना है ज़रूर, तो कर्म करना पड़ेगा; परन्तु इस समय में तुम बच्चों को ये मालूम है कि हम आत्माएँ अपने शांतिधाम के रहने वाले हैं और यहाँ हम अभी पार्ट बजा रहे हैं। अभी हमको मालूम पड़ा बाप से कि हमने यहाँ आ करके 84 जन्म का पार्ट बजाया है। नहीं तो हम शांतिधाम के रहने वाले हैं; परन्तु खेल करना होता है ना। तो जैसे कोई ऑर्डिनरी जाते हैं खेल करने के लिए, वो कपड़ा बदलाते रहते हैं ना, तो ये भी बरोबर खेल करने के लिए; क्योंकि अभी तुम बच्चों को ये ज्ञान मिला हुआ है। 84 जन्म के चक्कर का कोई भी मनुष्य को मालूम नहीं रहता है। देखो, इस चक्कर का सिर्फ तुम बच्चों को मालूम रहने से कि हमने 84 का चक्कर पूरा किया है। तो इस हिसाब से हम पहले–2 तो सूर्यवंशी राजा थे, रानी थे वा प्रजा थे। अच्छा, 84 का चक्कर फिराय, अभी चक्कर पूरा है। हमको फिर से वो सूर्यवंशी राजा–रानी बनना ही है। तो अभी तुम बच्चों को 84 का ज्ञान हुआ ना। इससे सिद्ध हुआ कि तुम सृष्टि चक्र

के आदि,मध्य,अंत को जान गए अर्थात् ये जो बड़ा चक्कर है, सृष्टि का चक्कर, जिसको ही रचना कहा जाता है, उस रचना को भी जान चुके। किस द्वारा? रचता द्वारा। तो अभी तुम बच्चे कितने सौभाग्यशाली हो! कोई भी विद्वान,आचार्य,पण्डित,शंकराचार्य फलाने, यहाँ इतने बड़े–2 मनुष्य हैं, अरे एक को भी इस सृष्टि चक्कर का कोई भी पता नहीं है। ये तो सहज है ना बच्चों को समझना। इसमें तकलीफ तो नहीं है ना कि आप अपन को आत्मा समझना और बाप ने आय समझाया। गाया भी जाता है कि भाई खेल में 84 का चक्कर है। अभी 84 का चक्कर, वो तो लाखों वर्ष कह देते हैं, उनका तो गपोड़ा ही छोड़ दो; क्योंकि दुर्गति मार्ग में गपोड़े ही होते हैं। अभी तो सद्गति मार्ग है और ये समझना भी ज़रूर है कि बरोबर सर्व का सद्गति दाता एक है। तो ज़रूर सद्गति देते हैं। अभी तुम बच्चे पूरे जान गए कि बाबा आ करके हमको 21 जन्म के लिए सद्गति को प्राप्त करा रहे हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में ये तो बात है ना। ये जो–2 भी ज़री–2 बात, ये सिर्फ तुम बच्चे जानते हो। बाहर वाले मनुष्य कोई भी नहीं जानते हैं। सिर्फ तुम जो ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ कहलाने वाले हो, सो ये जानते हो। कोई कहे, तुम ब्रह्माकुमार–कुमारी क्या जानते हो? तो परीक्षा होनी चाहिए ब्रह्माकुमार और कुमारी की कि सचपच(मुच) ब्राह्मणी हैं, ब्राह्मण हैं या नहीं? तो उनसे कोई पूछे कि अच्छा, अगर तुम ब्राह्मणी ब्रह्मा के बच्चे हो, तो क्या सृष्टि के चक्कर को जानती हो कि सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है? अगर बाप को जानते हो तो रचना के आदि,मध्य,अंत को जानते हो? क्योंकि ये गायन है कि वो कहते हैं कि न हम रचता बाप को जानते हैं, न रचना के आदि,मध्य,अंत को जानते हैं। अगर तुम बच्चे कहते हैं कि हम परमपिता परमात्मा, जो रचता है, उनको अच्छी तरह से जानते हैं, तो उससे सिद्ध होता है कि तुमको उस रचता से रचना के आदि,मध्य,अंत को जानना चाहिए; क्योंकि ये कहावत है कि प्राचीन ऋषि–मुनि भी रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते थे, इसलिए नास्तिक थे; क्योंकि अगर आस्तिक होते रचता के, तो फिर उस रचता से सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को जान जाते; परन्तु वो तो सभी नास्तिक हैं। तुम बच्चे जानते हो तुम भी नास्तिक थे। तुम इसके आगे कोई रचता और ... इस रचना के आदि,मध्य,अंत को जानते थे? नहीं जानते थे ना; क्योंकि जो भी स्कूल में आते हैं, वो अनपढ़े होते हैं, कुछ भी नहीं जानते हैं। तो आ करके पहले दर्जा या पौड़ी या कुछ भी पढ़ते हैं। फिर उनसे कोई पूछे तो बोलते हैं– हाँ, हमने अभी स्कूल में ये–2 पढ़ा हुआ है, आगे हम नहीं जानते थे। अभी तुम हो ईश्वरीय स्कूल में। परमपिता परमात्मा तुमको पढ़ाते हैं। तुम कह सकती हो कि परमपिता परमात्मा जो रचता है, तुम्हारी बुद्धि में भी ज़रूर पक्का समझना चाहिए कि जो रचता बाबा शिव है, शिवबाबा ही कहेंगे या रूद्र कहेंगे; क्योंकि रूद्र ने ज्ञान यज्ञ रचा है– ये शास्त्रों में लिखा हुआ है। अभी रूद्र और शिव में कोई फर्क तो है नहीं और ये भी लिखा हुआ है सीधा कि बरोबर रूद्र ज्ञान यज्ञ से ये विनाश ज्वाला प्रज्ज्वलित हुई। अच्छा, ये कहाँ लिखा हुआ है? फिर भी ये गीता में ही लिखा हुआ है, भागवत में लिखा हुआ है। सिर्फ वो बिचारे रूद्र, शिव और कृष्ण इनमें मूँझ गए हैं बिल्कुल ही। नहीं तो रूद्र कहो या शिव कहो, बात तो एक ही है ना। तो ये यज्ञ भी है। ये भी जानते हो– राजस्व अश्वमेध ज्ञान यज्ञ भी है। जो गाया जाता है कि बरोबर परमपिता परमात्मा ने यानी भगवान ने, फिर लिख देते हैं कृष्ण ने। देखो, भूल कहाँ है ज़री–सी। है वही रूद्र ज्ञान यज्ञ, है वही गीता, जिसमें कहते हैं कि इस ज्ञान यज्ञ से ये विनाश ज्वाला प्रज्ज्वलित हुई है। देखो, समझने की बात है ना। तो ये रूद्र ज्ञान यज्ञ भी है। बरोबर राजस्व स्वराज्य के लिए ये ज्ञान यज्ञ है। इसको सिर्फ पाठशाला भी नहीं कह सकते हैं। यज्ञ भी ज़रूर कहें; क्योंकि इस यज्ञ में सब कुछ स्वाहा होना है। ये ज्ञान यज्ञ है ना। तो इनमें ये भी है कि जब हमको बादशाही मिलती है, तो फिर ये जो सारी दुनिया है, ये सभी जो यज्ञ है, यज्ञ तो छोटा होता है ना, फिर उनमें आहुति डालते हैं– कचड़ा–वचड़ा बहुत ही....। वो ब्राह्मण लोग जानते हैं जो यज्ञ करते हैं। उसमें कितनी सामग्री होती हैं! वो उसमें पिछाड़ी में स्वाहा करते हैं जब यज्ञ पूरा करते हैं। तो अभी ये भी लिखा हुआ है बरोबर ये भी गीता

में लिखा हुआ है रूद्र ज्ञान यज्ञ ... ये सभी सारी जो भी पुरानी दुनिया है, वो स्वाहा हो जाएंगी। अभी तुम बच्चों को ये भी तो खातिरी है ना कि हम जब राजभाग ले रहे हैं, तो हम कोई इस पतित दुनिया में तो आएँगे नहीं। हमारे लिए ज़रूर ये जो भी है, ये सभी स्वाहा हो जाएगी यानी खतम हो जाएगी। खतम कैसे होती है, ये भी तो तुम बच्चे जान चुके कि ये नैचुरल कैलेमिटीज़ होंगी वगैरह–2। तो ये सभी तुम बच्चों की बुद्धि में तो बैठना चाहिए ना। शिवबाबा कहते हैं मेरी बुद्धि में भी ये ज्ञान है ना, तुम गायन तो करते हो ना कि बाबा सत् है, चैतन्य है, ज्ञान का सागर है और वही इस सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को जानते हैं; क्योंकि ऋषि–मुनि भी कहते गए कि रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत को...जानते हैं। तुम्हारे से कोई पूछेंगे तो सही ना कि वहाँ तुमको क्या प्राप्त होता है? बोलते हैं, जो ऋषि–मुनि कहते थे कि हम रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते हैं, सो हम जानते हैं। किससे जानते हैं? सिवाय रचता के कोई भी रचना के आदि,मध्य,अंत को समझा नहीं सकते हैं। तो देखो, रचता ही समझाएँगे। रचना तो कभी नहीं समझाएँगे ना। रचना को जब रचता न समझावे...। देखो, कोई भी नहीं कुछ भी नहीं समझते हैं। जैसे जंगली जनावर हैं, उल्लू जो कुछ चाहे उनको कहो। जो चलन जनावर की है, बंदरों की है, वही इनकी है। पर ये मनुष्य हैं, इसलिए ये सब राजाई वगैरह चलाते हैं। कोई जनावरों में तो राजाई नहीं होती है ना। भले और प्रकार से कोई–2 में होती है। देखो, बाबा ने कहाँ समझाया था ना– ये माखी की मक्खी हैं ना, उनकी भी रानी रहती है। वो भी अपना राज्य चलाती है। देखो, उन मक्खियों का कितना लश्कर होता है। जब रानी चल जाती है तो सारी पल्टन उनके पिछाड़ी चली जाती है। जहाँ वो जा करके बैठेगी सब वहाँ जाकर उस मनारे में, वो इतना बड़ा ढिगला हो जाता है। इतने बड़े ढिगले में कितनी मक्खियाँ होती हैं! देखो, कितनी एकता! माँ के पिछाड़ी कितना ... है उनका। तो जनावरों में भी है ना बरोबर। ये गाया हुआ है कि बाप भी जब आते हैं तब अपने बच्चों को...। जैसे मक्खियों की रानी सभी को ले जाती है, जा करके दूसरे घर में बिठाती है, तैसे तुम जानते हो कि बाबा आया हुआ है, हम सब आत्माओं को साथ में ले करके, जा करके शांतिधाम में बिठाएँगे। पीछे तुम जानते हो कि फिर से ये पार्ट शुरू होगा सतयुग का, देवी–दवताओं का, जिस देवी–देवताओं के पार्ट बजाने के लिए तुम यहाँ देवी–देवता पद पा रहे हो। यहाँ आते ही हो मनुष्य से देवता पद पाने। तो यहाँ पाना रहता है। सभी गुण यहाँ धारण करना है। तो देखो, बाप समझाते हैं। कृष्ण भी दिखलाते हैं। ये भी दिखलाते हैं। बोलते हैं, तुमको अभी इन जैसा बनना है। अभी ऐसे तो नहीं कि चैतन्य बैठ करके दिखलावे या कुछ करे। नहीं, ये तो अव्यक्त मूर्तियाँ हैं। ये सिवाय दिव्य दृष्टि से देखा नहीं जा सकता है। जाना तो जा सकता है ना। अभी तुम बच्चे जानते हो– हम भविष्य में फिर से यही सूर्यवंशी महाराजा–महारानी बन रहे हैं। देखो, बच्चों के लिए एम–ऑब्जेक्ट हुआ ना। और तो कोई जगह में कोई एम–ऑब्जेक्ट है सिवाय उस राजसी, राजुनी विद्या ! भई हम बैरिस्टर बनेंगे, हम जज बनेंगे, हम फलाना बनेंगे, हर एक बात में, हम राजा बनेंगे, हम क्या काम करने वाले बनेंगे। तो वो बनाने, जानने वाला उनको सिखलाते हैं। अभी ये तुम बच्चों को स्वर्ग की राजधानी कैसे स्थापन होती है ; नहीं तो होनी तो ज़रूर है ना। ये तो समझते हो। बच्चे, सब कोई जानते हैं ये कलहयुग है। सतयुग में देवताओं का राज्य था। अभी ये तो जानते हो ना। कोई से भी पूछेंगे, विद्वान–आचार्य, तो कहेंगे; परन्तु कहेंगे– देवताओं का राज्य तो बहुत थे और देवताओं के राज्य में भी यही था, राक्षस तो था ही, फलाना तो था ही, बच्चे भी पैदा करते थे। विकार भी था ही। वो लोग ऐसे कह देते हैं। किससे भी जा करके पूछो, विद्वान–आचार्य से या कोई से भी। पर उनको ये मालूम नहीं है कि ये भारत बहुत..पवित्र खण्ड था। देखो, महिमा भी करते हैं– सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमो दैवी धर्म। तो देखो, जा करके मत्था भी टेकते हैं, मंदिर भी बहुत बने हुए हैं; परन्तु इन बिचारों को इतना मालूम नहीं है कि ये आदि सनातन देवी–देवता धर्म, जो सतयुग का,

वो कैसे स्थापन हुआ; क्योंकि अभी तो कलहयुग है। वो ख्याल में भी कोई के नहीं बैठ सकता है। बुद्धि में ही नहीं है, ये भारत जो इतना ऊँच था, वो इतना नीच कैसे बना। बस, क्या कहते रहते हैं, ये तो भावी है। ये बनी है। बनी–बनाई बन रही। क्या? ये भावी है। किसकी भावी है, वो भी बिचारे नहीं समझते हैं। अगर ड्रामा की भावी समझे तो फिर उनको समझ में आवे– ड्रामा का क्रियेटर, डायरेक्टर कौन है। ...जो कुछ भी हो जाता है, सिर्फ कह देते हैं ये ईश्वर की भावी, प्रभु की ये भावी; परन्तु वास्तव में ये प्रभु की भावी नहीं है, अब ये ड्रामा की भावी। अगर कोई ड्रामा का अक्षर लेवे भी, तो ड्रामा कहने से, ड्रामा के तो आदि,मध्य,अंत को ज़रूर जानना चाहिए, जो कोई कहते हैं 'ड्रामा'। अभी तुम सिर्फ कह देंगे– भई यहाँ ड्रामा है। बनता है ना। कहेंगे, ये नया ड्रामा बना हुआ है। अख़बार में पढ़ा हुआ है। अच्छा, क्या है ड्रामा में? पढ़ने से कुछ ड्रामा का पता पड़ेगा, जब तलक कोई जा करके उस ड्रामा को देखे नहीं ? अखबार में पढ़ेंगे। भई, अख़बार में पड़ा हुआ है– आज फलाना...कृष्ण चरित्र का ड्रामा बना हुआ है। अभी बना हुआ है, देखने बिगर तो कोई समझ नहीं सकेंगे। तो जाएगा, देखेगा, तब समझेगा कि भई इस ड्रामा में ये सब कुछ होता है। नहीं तो न देखने से कुछ मालूम पड़ेगा ? तो तुम बच्चों को कुछ भी मालूम नहीं था इस बड़े ड्रामा का। मनुष्य कहते हैं बरोबर कि वर्ल्ड की हिस्ट्री का चक्कर फिरता है यानी फिर–2 से चक्कर फिरता रहता है। तो चक्कर का नाम भी यही लिखा हुआ है कि सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलहयुग। अच्छा! फिर संगमयुग है; परन्तु मनुष्यों ने उनमें कह दिया है युगे–2 यानी हर एक सतयुग के बाद जो त्रेता आता है, उसका युग संगमयुग। अभी इस संगमयुग का कोई भी महत्व है ही नहीं कुछ भी। यहाँ देखो, संगम बनाया है ना, ये जिसको कुम्भ कहते हैं। तो देखो, स्नान करते हैं। अभी सतयुग और त्रेता जब बदलता है, कुछ भी नहीं होता है। अभी तुम जानते हो कि बरोबर सतयुग से त्रेता के राज्य, सूर्यवंशी चंद्रवंशी को राज्य कैसे देते हैं। ... नहीं कहेंगे कि चंद्रवंशियों ने सूर्यवंशियों के ऊपर जीत पहनी। ऐसे नहीं कहा जाता है। तुम बच्चे जानते हो कि जब चंद्रवंशियों का राज्य होता है तो वो जो भी सूर्यवंशी राजा–रानी हैं, वो उनको बिठा करके, उनको राजभाग दे करके, तिलक दे करके, उस समय से उनको राजा राम और सीता रानी उनका टाइटल मिल जाता है। भई, अभी सीता और राम का राज्य शुरू हुआ। किसने उनको दिया? सूर्यवंशियों ने दान में दिया यानी ट्रांसफर किया, बदली किया– अभी तुम राज्य करो। अभी ये सीन तुम लोगों (को) दिखलाई गई है। तुमने अच्छी तरह से देखी है कि कैसे ; कोई लड़ाई–वड़ाई नहीं लड़ती है; पर मनुष्यों को क्या मालूम कि क्या होता है। सूर्यवंशी के पीछे ये चंद्रवंशी रामराज्य कैसे उनको मिला? क्या किया उन्होंने ? बस, ये जानते हैं कि सतयुग में सूर्यवंशियों का राज्य है, त्रेता में चंद्रवंशियों का राज्य है। ऑटोमैटिकली तुम जानते हो देते भी हैं हम बैठ करके उनको, जैसे किसको राजाई दी जाती है ना, तैसे दी जाती है। वो सूर्यवंशी राजा–रानी चंद्रवंशियों के पैर धो करके, गुरु–गोसाई तो कोई होते ही नहीं हैं, बस उनको राजतिलक दे देते हैं। अभी जानते भी हो– सूर्यवंशी भी देवता, चंद्रवंशी भी देवता। सिर्फ वो सूर्यवंशी कहलाते हैं, वो चंद्रवंशी कह...। लड़ाई का कोई भी नाम सुना नहीं है कि वहाँ कोई एक लड़ाई लगी है। किसमें लगेगी? आपस में देवी–देवताओं की तो लग नहीं सकती है। नहीं। अगर लड़ाई दिखलाते हैं तो असुरों और देवताओं की दिखाई है। अच्छा, फिर देवताओं को राज्य मिला है। फिर असुर राज्य शुरू है। फिर असुरों की असुर में .. हुई है, लड़ाइयाँ हुई हैं। देखो, ये जो भी लड़ाइयाँ चली आ रही हैं, अभी जो ये लड़ाई करते हैं, देखो ये सभी असुर। असुरों की आपस में भिन्न–2 प्रकार की कितनी लड़ाइयाँ हैं। इसको कहा जाता है आसुरी स्वभाव। तुम बच्चों की बुद्धि में है अभी हम दैवी स्वभाव वाले बनते हैं। सूर्यवंशी और चंद्रवंशी घराने में हम सुख ; उसको ही सुखधाम कहा जाता है। उसमें अब सुखी और बाबा आ करके हमको अभी दुःख से निकाल सुखी करते हैं। ये जानते हो कि इस दुनिया भर में ऐसा कोई भी साधु,संत,महात्मा नहीं है, बल्कि वो भी बिचारा चाहता है कि हम शांतिधाम में जावें। तो

बाप आ करके कहते हैं– साधु नाम जिनका है, उनका भी मैं उद्धार करके यहाँ से फिर उनको भी अपने शांतिधाम में ले जाते हैं। अभी बच्चे जानते हैं कि हम जब वहाँ मूलवतन में रहते हैं, तुम अभी जानते हैं कि हम सूर्यवंशी राजधानी की जीव आत्माएँ हैं। ये अभी तुम जानते हो कि सूक्ष्मवतन में, ये जो भी सन्यासी हैं, वो फिर जब द्वापर होता है ना, तब ये शंकराचार्य वाले आते हैं। ये निवृत्तिमार्ग वाले तब आते हैं। अभी वहाँ भी तो है ना। स्वर्ग में हम रहते हैं। बरोबर वहाँ भी तो हैं ना, सेक्शन्स हैं ना। सूर्यवंशियों का सेक्शन अलग मूलवतन में, चंद्रवंशियों का अलग। देखो, अच्छा पीछे नीचे आओ तो ये जो संन्यासियों की आत्माएँ हैं वो बिल्कुल अलग। तो देखो, सेक्शन्स बने हुए हैं ना। वैसे देखो, ये झाड़ में भी सेक्शन्स बने हुए हैं। फिर जब हम राज्य करते हैं, देखो कोई नहीं है वहाँ बिल्कुल ही। तो मूलवतन में भी हम समझते हैं कि ऐसे ही माला बनी हुई है। पहले हमारी माला है, फिर हमारी माला से दूसरे सब निकलते हैं। तो इसको कहा जाता है भारत प्राचीन और भारत के ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म के हैं, जिनसे बाद फिर ये बिरादरियाँ निकलती रहती हैं। अनेक बिरादरियाँ होती हैं ना। देखो, कितनी बिरादरियाँ होंगी इस भारत में इस समय में। ये बिरादरी तो मनुष्यों से मनुष्यों की हुई है; परन्तु ये बिरादरी .... बड़े–2 जो धर्मस्थापक हैं उनसे निकली है। तो भी कहेंगे पड़ी पहले यहाँ। मनुष्य तो यहाँ थे ना– देवी–देवताएँ, पीछे इस्लामी। अभी इस्लामी बिरादरी कहाँ से निकलेगी? ज़रूर मनुष्य से मनुष्य निकलेंगे। ज़रूर कोई मनुष्य यहाँ से जाएगा जिसमें प्रवेश करेगा जिससे फिर इस्लामी बिरादरी निकलेगी। तो तुम अभी ये जानते हो कि ये हमारी छोटी नंबर सेकण्ड बिरादरी है। फिर तुम कहेंगे कि ये हमारी थर्ड बिरादरी है। फिर ये क्रिश्चियन लोगों के लिए तुम कहेंगे– हमारी फोर्थ बिरादरी है। हम सबसे ऊँचे हैं, सूर्यवंशी बिरादरी वाले हैं। देखो, इसको कहा जाता है बेहद की बिरादरियाँ। वो हैं हद की बिरादरियाँ। ये अग्रवाल–फग्रवाल धूर.. बहुत लाखों–करोड़ों होंगी। और यहाँ मुख्य चार बिरादरियाँ। हम पहले आते हैं, पीछे हमारे से बौद्धी बिरादरी निकलती है इस तरफ में। फिर इस्लामी निकलती है, फिर बौद्धी बिरादरी निकलती है। तो अभी तुमको ये ज्ञान हुआ। हम ऊँचे ते ऊँच बिरादरी हैं ऊँच कुल की। हमारी इस ऊँच बिरादरी में सुख बहुत, अथाह सुख। अभी हमारी वो बिरादरी नीचे गिर गई है; क्योंकि हमको ही 84 जन्म ले करके नीचे जाना पड़ता है। इसलिए हमारी बिरादरी जो फर्स्ट थी सो लास्ट में आ गई है। फिर जो लास्ट में आ गई है सो फिर फर्स्ट। है बिरादरी, ऐसे नहीं है कि बिरादरी नहीं है। नहीं। ये तुम जानते हो कि वास्तव में हम देवी–देवता धर्म के हैं; परन्तु फिर पतित बनने के कारण हम सिर्फ अपन को हिन्दू कहलाते हैं, नहीं तो हैं हम देवी–देवता। बिरादरी हमारी वही चली आती है। पतित होने कारण अपन को देवी–देवता नहीं कहते हैं; क्योंकि हम पूजते तो हैं ना देवी–देवताओं को। इससे सिद्ध होता है हम इनकी बिरादरी के हैं। जैसे क्रिश्चियन लोग क्राइस्ट को पूजते हैं, उनकी बिरादरी के हैं, हर एक ऐसे जैसे सिक्ख हैं, नानक को... तो उसकी बिरादरी के हैं। ऐसे होता है ना। सन्यासी हैं, शंकराचार्य की बिरादरी के हैं। तो हम किसकी बिरादरी के हैं? हम पहली बिरादरी। मनुष्य सृष्टि में पहले नंबर सतयुग में हमारी। हमारे से ऊँची बिरादरी कोई होती नहीं है। ये मनुष्य सृष्टि की जीवआत्माओं की हमसे कोई बड़ी बिरादरी नहीं होती है। हम ऊँचे ते ऊँची बिरादरी वाले। हम स्वर्ग में ही आते हैं। हम ही सबसे जास्ती सुख भोगते हैं और इस समय में देखो कि हम जो बिल्कुल ऊँच ते ऊँच थे वो बिल्कुल ही नीच ते नीच हो गए हैं। देखो, डुक्कड़ वगैरह ये सब कुछ यहाँ ही है। भूख भी यहाँ ही मरते हैं। तुम अख़बारों में पढ़ेंगे, सबसे दुःखी ये हैं, सबसे जास्ती कर्जा ये लेते हैं, सबसे जास्ती अन्न भी ये मँगाते हैं। मालूम तो है ना कि हम उफ कितनी बिरादरी...! तो होते हैं ना, कोई मनुष्य बड़े ऊँच बिरादरी का है। वो हमारे डाडे तो बात मत पूछो, उनके पास तो बदूकें–तलवारें, बड़े जमींदार थे। अभी वो गरीब हो गए हैं। ऐसे यहाँ भी बहुत बड़े बैठे होंगे, जिनके बड़े बड़े साहूकार होंगे और फिर वो अभी गरीब हैं; क्योंकि वो गुमाय दिया आपस में, पैसा ही एकदम खलास कर दिया। तो ये बिरादरी को गरीब

बनने में...। देखो, कैसे तुम बच्चे जान गए कि हम कितने साहूकार, बहुत साहूकार थे, पीछे हम ये भक्तिमार्ग में आ करके गिरते–3 कहाँ तक चले गए हैं। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में ये रहा ना। अभी बेहद की बिरादरी के हम महान सुखी थे। पीछे दुःख। अभी देखो, ये भी गाया जाता है कि दुःख हर्ता, सुख कर्ता। अभी दुःख किनके हरते, सुख किनके करते, अब ये दुनिया तो नहीं जानती है ना। ये बाप आकर...। सब तुम जान गए हो कि हमको इन दुःख से छुड़ाय सुखधाम का मालिक बनाते हैं। बाकी जो भी धर्म वाले हैं, वो सभी शांतिधाम में चले जाते हैं। अभी देखो, तुम 21 जन्म सुख भोगते हो और वो जो बाकी हैं, वो आधाकल्प तो शांति में रहते हैं और अभी यहाँ के मनुष्य चाहते भी कि हम मुक्तिधाम में जाएँ। हम जीवनमुक्ति में, सुख में नहीं जाने चाहते हैं; क्योंकि सुख में तो अल्पकाल क्षणभंगुर कागविष्ठा समान सुख है। ये किसने आ करके बताया? सन्यासियों ने। सन्यासी कहते हैं कि इस दुनिया में सुख तो कागविष्ठा समान है। बस, वो यही कहते हैं; क्योंकि उनको सुख का कोई अनुभव नहीं। तुम बच्चों को सुख का अनुभव है। क्यों? तुम जब इनके पास जाते हो, तो तुम इनकी महिमा करते हो। भूल गए हो कि हम इस धर्म के हैं; क्योंकि पतित हो। नहीं तो हो तो बरोबर इस धर्म के ना बरोबर। दूसरे तो नहीं हो ना। अभी तुमको ये मालूम पड़ता है। तभी बाप कहते हैं– हे भारतवासियों! कि तुम तो इनके पुजारी हो ना। तो तुम देवी–देवता धर्म के हो ना। समझा ना। अच्छा, हिन्दू हो ना। तो भी हो तो इस धर्म के ना। हिन्दू धर्म तो कोई है नहीं वास्तव में। तुम आदि सनातन देवी–देवता धर्म के हो। आदि सनातन कोई हिन्दू धर्म नहीं है। अभी तुम जान गए कि आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। द्वापर से इन्होंने अपना नाम हिन्दू बदल दिया। नहीं तो हैं ये पवित्र देवी–देवता धर्म वाले। अभी पतित हो पड़े हैं और कहते रहते हैं कि हे पतित–पावन आओ। अभी देखो, भारतवासी हो ना। बच्चे, तुम ये अक्षर कहते हो– हे पतित–पावन आओ। अभी तुमको ये भूल गया है कि हम ही पावन थे। वो आ करके बाप ने बताया– अरे बच्चे, तुम ही पावन थे और फिर 84 जन्म, इतना जन्म लिया, इतना जन्म उस पावन दुनिया में लिया, फिर तुमने पतित दुनिया में लिया। नहीं तो तुम वास्तव में असुल इस सूर्यवंशी घराने के हो। अभी तुम भी जानते हो बरोबर इस सूर्यवंशी घराने का हम मालिक बन रहे हैं। इसलिए इस पाठशाला में आते हैं। तो ये पाठशाला की पाठशाला भी ठहरी, यज्ञ का यज्ञ भी ठहरा; क्योंकि इस ज्ञान यज्ञ में ये सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होने की है यानी खतम हो जाने वाली की है। ... ऐसे तो नहीं कि कुण्ड बनती है उसमें ये बनते हैं। ये तो दिखलाते हैं बरोबर होलिका कर–करके कि कैसे उनमें ये आत्माएँ और ये डालते हैं ना। और जो कोई भी यज्ञ रचते हैं, अग्नि डालते हैं, उनमें ये कोकियाँ बनाकर ..डालते हैं। ये ऐसे ही होलिका आती है तब उनमें दिखलाते हैं कि आत्माएँ और धागा डालकर, बोलते हैं– धागे सभी अमर रहते हैं, बाकी वो सब खतम हो जाती हैं। तो ये कहाँ का पर्व है? ये अभी का पर्व है कि बरोबर आत्माएँ सब चली जाएँगी और शरीर जो है वो जलकर खतम हो जाएँगे। तो अभी ये तुमको सन्यासी तो नहीं दे सके ना। ये नॉलेज है कुछ न कुछ गीता में ही; परन्तु वो जैसे कि आटे में लूण जाकर बनी है; क्योंकि नहीं तो जिसको प्रलय कहा जाता है, हो पड़े। तो बाबा कहते हैं नहीं, ये ज्ञान की एकदम प्रलय नहीं हो जाती है, प्रायः लोप हो जाता है। प्रायः माना थोड़ा कुछ न कुछ रहता है, बाकी लोप हो जाता है। मैं वहाँ आकर कहता हूँ ना– मैंने ये यज्ञ रचा है। बरोबर तुम अभी जानते हो कि यज्ञ रचा है। किसने? शिवबाबा ने। फिर उनको रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा कहो। इसमें तुम अपना शरीर तन,मन,धन स्वाहा करते हो, जीते जी मरते हो। तो अभी जीते जी मरते हो। कहाँ जीते जी मरते हो! कहाँ वो लड़ाई का सामान दिखला दिया हुआ है और एक रथ के बीच में वो कृष्ण बैठ करके लेक्चर देते हैं। अभी कृष्ण कैसे लेक्चर देंगे? भले कृष्ण को चक्कर भी दे देते हैं; परन्तु उनका अर्थ देखो कितना है! तुमको ये चक्कर का ज्ञान दे रहे हैं ना। चक्कर फिराने की स्थूल चीज़ की तो बात नहीं है ना। ये तो मूल बात है। समझने की सब बात। इसमें समझना होता है। बाप कहते हैं तुम बेसमझ बन गए हो। शास्त्र तो

बहुत पढ़े हो। बहुत–बहुत। यज्ञ,तप,दान,पुण्य,गायत्री, बहुत विद्वान हैं जिन्होंने बहुत कुछ कण्ठ भी कर दिया है। जिसने जास्ती कण्ठ किया हुआ है विद्वानों ने, उनकी यहाँ बहुत महिमा है; परन्तु बाप आकर कहते हैं– ये तो भक्तिमार्ग की सभी... जितना जो पढ़ेंगे उतना वो ज़रूर उनको पूजेंगे भक्तिमार्ग वाले। बाकी ये कोई भक्तिमार्ग नहीं है। ये ज्ञानमार्ग है। वो भक्ति, ये ज्ञान। वो रात, ये दिन। तो ये शास्त्रों को तुम ज्ञान मत समझो। ये तो गपोड़े हैं वास्तव में। इनमें कोई भी रखा हुआ कुछ नहीं है; क्योंकि बाप ने समझाया जो पढ़ते हैं उनको तो ये मालूम है। बिचारे क्या जाने कि ज्ञान किस चीज़ का नाम है। रिंचक भी नहीं जानते हैं। ज्ञान किसको कहा जाता है, कौन देते हैं, कोई भी नहीं जानते हैं और गाते हैं बरोबर कि वो है स्प्रिच्युअल फादर यानी वो रूहानी बाप, वो है सत्,चित,आनन्द स्वरूप और वो है ज्ञान का सागर। अभी देखो, कितनी महिमा करते हैं! ज्ञान का सागर तो मनुष्य की महिमा होनी चाहिए ना, जो ज्ञान देते रहते हैं विद्वान–आचार्य। ये फिर उनकी क्यों महिमा करते हैं निराकार की– ज्ञान का सागर, शांति का सागर? क्यों तभी गुरूओं के पास जाते हैं शांति के लिए? गाते तो हैं वही, सभी शास्त्र गाते हैं कि ज्ञान का सागर तो वो है। शांति का सागर तो वही है। सुख का सागर भी वही है। तुम बच्चे जानते हो कि बाबा हमको सुखधाम का मालिक बनाते हैं। बाकी शांतिधाम में। तो हो गया ना सुख का सागर। सुख भी तुमको इतना देते हैं जो दुःख का नाम–निशान नहीं। शांति भी वो उनको इतनी देते हैं जो अशांति का नाम–निशान नहीं; क्योंकि शांतिधाम में जाकर रहते हैं। तो ये बच्चों को सब याद रखना चाहिए ना, बुद्धि में होना चाहिए ना; क्योंकि पढ़ाई की खुशी होती है। तुम जाकर पूछो स्टूडेण्ट्स से, जो आई.सी.एस. पढ़ते हैं ना उनका दिमाग देखो या जो अच्छी पढ़ते हैं बड़े–2 बी.कॉम फलाना, उनका दिमाग देखो और जो छोटा थोड़ा पढ़ते हैं उनका भी दिमाग देखो। तो अभी तुम्हारा दिमाग तो सबसे ऊँचा है एकदम कि हमको पढ़ाने वाला कौन? उफ! बेहद का बाप। ... कोई नहीं जानते। गाते भी हैं कि परमपिता परमात्मा निराकार ज्ञान का सागर है। तो ज़रूर ज्ञान वो देंगे ना और गाते भी हैं कि मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है और फिर कहते हैं– ज्ञान का सागर है। अब बीज में क्या ज्ञान होगा? अपने ही रचना का। कोई भी बीज उठाओ, आम का। वो जड़ है; परन्तु उनमें ये ज्ञान तो है ना मेरे से इतना झाड़ होगा। तैसे ही ये मनुष्य सृष्टि का झाड़, उनका बीज रूप परमपिता परमात्मा और ये चैतन्य और गाया भी जाता है कि नॉलेजफुल है। तो उनको नॉलेज क्या चीज़ की होगी, ये तो विचार करो और क्या नॉलेज होगी? बीज में क्या नॉलेज होगी, बोलो। जिस चीज़ का जो बीज होगा, उसको अपने झाड़ की नॉलेज। तो ये मनुष्य सृष्टि का बीज। तो वो बोलते हैं कि ज़रूर उनको मनुष्य सृष्टि झाड़ की ही नॉलेज होगी। तो देखो, वो आ करके तुम बच्चों को अभी सारे मनुष्य सृष्टि के झाड़ के... । ये झाड़ कौन–सा है? वैराइटी धर्मों का झाड़ है। भल ये वैराइटी धर्मों का झाड़ है, जब पहले नंबर में है तो सिर्फ एक वैराइटी है। ये भी जानते हो कि एक वैराइटी धर्म की। कौन–से? देवी–देवता धर्म की वैराइटी, और दूसरा कोई नहीं। पीछे ... कैसी बदलती है, फिर फट से वो इस्लामी, ये काले लोग एकदम। पीछे बौद्धी की। देखो, अभी तुम जान गए वैराइटी की। फीचर्स ही बिल्कुल फर्क–2। देखो, चीन का फीचर्स कैसा होता है एकदम, चुचे अँखियाँ और चीन का असुल में इतना तो पैर होता है। वैराइटी हो गया ना। इसको कहा जाता है वैराइटी मनुष्य सृष्टि का झाड़। जिसका बीज रूप ऊपर है। वो बीजरूप है, सत् है, चैतन्य है, ज्ञान का सागर है, सुख का सागर है। वो आ करके तुमको अभी सब कुछ बताते हैं गोया आप समान बनाते हैं। बाकी वो कोई आ करके राजाई नहीं लेते हैं। वो बोल देते हैं– तुम बच्चों को हम फिर से वो राजाई दे करके फिर हम वानप्रस्थ में रह जाते हैं। वानप्रस्थ वगैरह ये सभी नाम भारत में होते हैं। असुल कायदा बड़ा था– 60 वर्ष हुआ, गुरू लिया कि हम अभी वानप्रस्थ बने हैं। वानप्रस्थ अर्थ क्या? वाणी से परे हम फिर शांतिधाम में जाते हैं। समझा ना। वाणी से परे है शांतिधाम। सुखधाम को वाणी से परे नहीं कहेंगे। अरे, वहाँ तो खेल करना होता है, वहाँ तो सुख

लेना होता है। तो यहाँ सब मनुष्य साधु लोगों के संग में जा करके कहते हैं– हम वानप्रस्थ लेते हैं। उनके संग में हम वाणी से परे जहाँ से आए हैं वहाँ चले जाएँगे। जाता एक भी नहीं है। वो साधु लोग ही नहीं जाते हैं। तुम बच्चों को भिन्न–2 प्रकार से ये ज्ञान की मुरली। ऐ मुरली तुंजी में जादू, आए पेल खुदाई। सिंधी में ऐसे कहते हैं। मुरली है, ये अभी कृष्ण की महिमा करते हैं। मुरली तेरी में जादू, है ... कोई खुदाई। अभी कृष्ण तो बिचारा जानता ही नहीं। यहाँ सतयुग की बात ही नहीं है। यहाँ तो संगमयुग की बात है। तो देखो, कहते भी हैं ना– जादूगर, रत्नागर। अभी रत्नागर, ज्ञान का सागर हुआ ना। जादूगर, ये बरोबर ये तो जादू इतना ; ये देखो ये आए हैं, ये सब भूल जाते हैं और बरोबर मनुष्य से देवता बन जाते हैं। ये कड़ा बड़ा जादू है! तो ऐसे नहीं समझाना चाहिए हमारा मुरली बिगर काम हो जाएगा और मुरली छोड़ देते हैं, घर में बैठ जाते हैं। नहीं। आते हैं तो स्कूल में ज़रूर आना है। युक्तियाँ मिलेंगी। जो हंगामें होते हैं, कभी अशांति हो जाती है, मुरली पढ़ने से उनको शांति आ ही जाएगी। न पढ़ेंगे तो फिर वो तो गाया जाता है ना– लिखेंगे–पढ़ेंगे होएँगे नवाब, रुलेंगे–पिलेंगे होएँगे खराब। तो और तो कोई ऐसे नहीं होता है ना। पाठशाला भी है, यज्ञ भी है। गाया भी जाता है कि इस यज्ञ से ये विनाश ज्वाला प्रज्ज्वलित हुई है। समझा ना। अभी देखो, ये तो मनुष्य कहेंगे– ये क्या, ये लोग की जो पढ़ाई है, ज्ञान यज्ञ इसको कहते हैं, ये पढ़ते हैं और बोलते हैं कि ये सारी दुनिया विनाश हो जाएगी। तो क्या ये विनाश के लिए बैठकर पढ़ते हैं? हाँ, हम लोग देवता बनते हैं, हमारे लिए फिर नई दुनिया चाहिए ना। तुम रामराज्य चाहते हो। रामराज्य नई दुनिया में होगा या पुरानी दुनिया में होगा? गाँधी जी रामराज्य चाहते हैं ना। नेहरु भी रामराज्य चाहते हैं। रामराज्य कोई पतित दुनिया में थोड़े ही होगा। तो ज़रूर विनाश होगा ना। सो जो फिर रामराज्य में जाने वाले होंगे उनको राम राजाई सीखना भी तो पड़े ना। ऐसे थोड़े ही रामराज्य मिल जाएगा। पतित थोड़े ही रामराज्य में जाएँगे। पावन ही तो जा सकेंगे ना। हाँ, आओ बच्ची! तुमने ही भोग लगाया और तुम लोगों ने ही खाया। मैं तो सर्वेन्ट हूँ तुम्हारा, अभोक्ता हूँ। इसलिए ये कहाँ से आए? भाई–बहनों ने लाया और भाई–बहनों ने खाया। कौन–से भाई–बहनों ने लाया? ब्राह्मण कुलभूषण भाई–बहनों ने लाया और ब्राह्मण कुल भाई–बहनों ने खाया। .....क्या इनको कमाई होती है? डेढ़ सौ रुपया, सवा सौ रूपया। पाँच–2 भांती घर में, अभी वो आ करके अपना वर्सा ले रहे हैं। अब बाकी जो लखपति और करोड़पति हैं, वो यहाँ नहीं आ सकते हैं। उनको लज्जा आती है यहाँ आने में। एक तो लज्जा, दूसरा जब सुनते हैं ना कि यहाँ तो पवित्रता की रखड़ी बांधते हैं, तब फिर ..... यहाँ तो तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए, अपार खुशी होनी जाती है ; क्योंकि अभी उनके घर में बैठे हो। वो तो दूर रहते हो, बहुतों के बीच में गोरखधंधा लगा पड़ा है बिल्कुल ही। ये जाती होगी क्लास में हो करके, जा करके घर में, उआँ–उआँ, ये यहाँ लड़ा, वो वहाँ मरा ... और यहाँ तो देखो बैठे हो ना अंदर। तुम यहाँ से जाती हो तो दर से बाहर निकल जाती हो। यहाँ दर के अंदर घर बैठी हो। जानती हो कि हमारा आत्माओं का, जो सभी का बाप है, वो है और वो इस रथ द्वारा हमको पढ़ा रहे हैं। बस, महिमा ही उनकी है। रथ चाहिए उनको। इसलिए इस रथ में...। ये भी जानते हैं कि ये नंबर वन सांवरा रथ है। इसने बताया भी क्यों इनको गांवड़े का छोरा कहते थे, जबकि वैकुण्ठ का प्रिन्स था। इनको क्यों कहते हैं गामरे का छोरा? कोई कारण तो होगा ना। तो देखो, तुमको कारण आ करके बताते हैं कि गामरे के छोरे से वो एकदम जा करके ये बनते हैं। पीछे ये 84 का चक्कर लगाते हैं। अभी समझ गए बच्चे? अच्छा! मीठे–2 बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।